

राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर का व्यक्तित्व विकास में योगदान : एक अध्ययन

डॉ. जितेन्द्र कुमार चौधरी

सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र

ज्ञानचन्द्र श्रीवास्तव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय दमोह (म.प्र.)

सारांश— राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय आवासीय शिविरों के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास होता है। शिविर में होने वाली प्रतिदिन की गतिविधियों का बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिविर की दिनचर्या प्रातः जागरण से लेकर रात्रि विश्राम तक निश्चित नियमबद्ध समय सारणी के अनुसार होता है। विद्यार्थियों को उनको सौंपे गये विभिन्न उत्तरदायित्वों का निर्वाह जिम्मेदारी के साथ निभाना होता है। सामूहिकता में की गई गतिविधियों के कारण उनके आपसी सामाजिक सम्बंध, सहयोग एवं समर्पण की भावना जन्म लेती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, श्रमकार्य, बौद्धिक परिचर्चा, सामुदायिक सहभागिता एवं परियोजना कार्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अतः प्रस्तुत शोध आलेख ज्ञानचन्द्र श्रीवास्तव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय दमोह में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की 2 इकाईयों के सात दिवसीय विशेष शिविर स्थान शा.आई.टी.आई मारुताल दमोह में लगाया गया था। के सहभागी अवलोकन के आधार पर किये गये शोधकार्य में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास से सम्बंधित गतिविधियों का अध्ययन किया गया है।

मुख्यशब्द : व्यक्तित्व, सामाजिकरण, रासेयो एवं व्यक्तित्व का आशय, शिविर, शिविर दिनचर्या ।

प्रस्तावना :-

राष्ट्रीय सेवा योजना एवं व्यक्तित्व का आशय: राष्ट्रीय सेवा योजना समाज सेवा के माध्यम से छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व विकास का एक शैक्षणिक कार्यक्रम है। इस योजना के माध्यम से विद्यार्थियों को, समाज की वास्तविकता से साक्षात्कार कराने की पहल की जाती है और यह अपेक्षा की जाती है कि विद्यार्थी समाज के सभी वर्गों के बीच रहकर वह ज्ञान प्राप्त करे, जो उसके भावी जीवन के लिए आवा" यक है तथा उसके माध्यम से संचालित, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक गतिविधियों में सहायक हो और यह गतिविधियाँ

अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्र, प्रदेश अथवा जिस समाज में अपना जीवन गुजारता है उसके लिए हितकारी हो। मुख्य रूप से यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय सेवा योजना व्यक्तित्व विकास का आशय एक स्वस्थ और अच्छा नागरिक बनाना है। व्यक्तित्व विकास में रासेयो अधिकारियों का दायित्व प्रायः यह देखा गया है कि 18 से 35 वर्ष के युवाओं में समाज के प्रति कुछ कर गुजरने की ललक होती है इसलिए वे प्रायः ऐसे अवसरों की तलाश करते हैं जिसमें उन्हें समूह के कार्य करने का अवसर मिले और वे अपनी व्यक्तिगत प्रतिभाओं को लोगों के सम्मुख अभिव्यक्त कर सके इसलिए यह आवश्यक है कि कार्यक्रम अधिकारी रासेयो में पंजीबद्ध छात्र-छात्राओं के सम्मुख ऐसे अवसर उपलब्ध कराते हैं।¹

व्यक्तित्व— व्यक्ति के उस शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों का सुसंगठित एवं गतिशील संगठन है। जो व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के साथ रोज के सामाजिक जीन के आदान-प्रदान में एक दूसरे के प्रति प्रदर्शित करते हैं एंडरसन एवं पार्कर के अनुसार, "व्यक्तित्व आदतों, मनोवृत्तियों एवं लक्षणों का योग है जो सामाजिकरण का परिणाम है तथा दूसरे के साथ हमारे संबंधों को प्रभावित करता है।"

समाजशास्त्रीय अर्थ में व्यक्तित्व, व्यक्तियों के विचारों, अभिवृत्तियों एवं मूल्यों का योग है जो समाज में उनकी भूमिका का निर्धारण करते हैं एवं उनके चरित्र का अभिन्न अंग बन जाते हैं। व्यक्तित्व सामूहिक जीवन में योगदान के फलस्वरूप अर्जित किया जाता है। समूह के सदस्य के रूप में व्यक्ति कुछ आचरण विधियों एवं प्रतीकात्मक कौशल को सीखता है जो उसके विचारों मनोवृत्तियों एवं सामाजिक मूल्यों को निर्धारित करत है।²

सामाजिकरण—

सामाजिकरण एक सामाजिक-मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम समाज में रहना और उसके सक्रीय सदस्य बनना सीखते हैं। इस प्रक्रिया में समाज के मानदंडों एवं मूल्यों के साथ-साथ अपनी सामाजिक भूमिकाओं (पति/पत्नि,

माता/पिता, मित्र, नागरिक आदि) के सम्पादन करने की कला सीखने संबंधी दोनों बातें सम्मिलित होती हैं। यह तीन प्रक्रियाओं— सहसंस्कृतिकरण, मनोवेश नियंत्रण और भूमिका प्रशिक्षण के मेल से बनी अवधारणा है। संस्कृतिकरण (सांस्कृतिक मानवशास्त्र) मनोवेग नियंत्रण (मनोविज्ञान) और भूमिका प्रशिक्षण (समाजशास्त्र) के अध्ययन के विषय हैं।

मनोविज्ञान में सामाजीकरण को शैशवकाल की अर्जनात्मक एवं विकासात्मक प्रवृत्तियों के संदर्भ में देखा गया है जैसा कि हम फ्रायड एवं पीगेट के अध्ययनों में देखते हैं। समाजशास्त्र में इस प्रक्रिया को शैशवकाल तक सीमित न रखकर एक जीवंत पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया माना जाता है इसी प्रक्रिया द्वारा 'स्व' (सेल्प) का विकास की प्रक्रिया कहा है। सामाजिक सीख की इस प्रक्रिया में परिवार, समुदाय और शिक्षण संस्था की विशेष भूमिका होती है।³

शिविर:— राष्ट्रीय सेवा योजना 7 दिवसीय विशेष शिविर योजना का अभिन्न अंग है। शिविर का सर्वोत्तम उद्देश्य, युवाओं में नेतृत्व सह-आस्तित्व एवं बंधुत्व की भावना जागृत करना, श्रम के प्रति निष्ठा, शहर और गाँवों के बीच सांस्कृतिकों का आदान प्रदान शिविरों के माध्यम से होता है। इसलिए संस्था स्तर के विशेष शिविर ग्रामीण एवं सामाजिक परिवेश में लगाये जाते हैं। शिविरों के माध्यम से हमारी उभरती पीढ़ी का व्यक्तित्व पूरी तरह से निर्मित हो इसलिए शिविर दिनचर्या में अनिवार्य रूप से समयबद्ध तरीके से खेलकूद, श्रमकार्य, मानवीय सेवा, सांस्कृतिक कार्य, बौद्धिक कार्य तथा समाज सेवा संतुलन राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर की उल्लेखनीय विशेषता है।

शिविर की आदर्श दिनचर्या

6:00 बजे सुबह	—	जागरण
6:00 से 6:45 बजे सुबह	—	नित्यकर्म
6:45 से 7:15 बजे सुबह	—	प्रार्थना तथा योग/पी. टी./व्यायाम
7:15 से 7:45 बजे सुबह	—	नास्ता, चाय
8:00 से 12:00 बजे सुबह	—	परियोजना कार्य
12:30 से 1:30 बजे दोपहर	—	स्नान, भोजन
1:30 से 2:30 बजे दोपहर	—	विश्राम, स्वाध्याय
2:30 से 4:15 बजे दोपहर	—	बौद्धिक कार्यक्रम
4:15 से 4:30 बजे शाम	—	चाय
4:30 से 6:00 बजे शाम	—	खेलकूद
6:00 से 7:00 बजे शाम	—	ग्राम सम्पर्क
7:00 से 7:30 बजे शाम	—	समितियों की बैठक एवं कार्यों का मूल्यांकन

7:30 से 8:00 बजे रात्रि	—	भोजन
8:00 से 10:00 बजे रात्रि	—	सांस्कृतिक कार्यक्रम/डायरी लेखन
10:00 बजे रात्रि	—	रात्रि शयन

(समय एवं परिस्थिति के अनुसार शिविरार्थियों की सहमति से दिनचर्या में बदलाव किया जा सकता है।)⁴

उद्देश्य:—

व्यक्तित्व विकास में राष्ट्रीय सेवा योजना के 7 दिवसीय शिविर की गतिविधियों का अध्ययन करता।

उपकल्पना:—

सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में राष्ट्रीय सेवा योजना का विद्यार्थी अधिक सक्रीय एवं रचनात्मक होता है।

अध्ययन विधि एवं अध्ययन क्षेत्र:—

प्रस्तुत शोध प्रपत्र ज्ञानचन्द्र श्रीवास्तव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय दमोह की राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाई क्रमांक 02 और इकाई क्रमांक 03 (छात्र एवं छात्रा इकाई) का 7 दिवसीय विशेष शिविर दिनांक 15 मार्च से 21 मार्च 2023 शासकीय आई.टी.आई मारुताल दमोह में आयोजित किया गया जिसमें 50 छात्र एवं 50 छात्रा स्वयं सेवको ने पुरुष कार्यक्रम अधिकारी एवं एक महिला कार्यक्रम अधिकारी की देख रेख में शिविर में भाग लिया।

अध्ययन विधि:—

अध्ययन विधि के रूप में वर्णात्मक एवं सह-विश्लेषणात्मक शोध प्रारूप का चयन किया गया है।

निदर्शन:—

अध्ययन की समस्या एवं अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुये उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि के आधार पर सत् प्रतिशत स्वयं सेवको को चुनाव कर सहभागी अवलोकन एवं साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है।

राष्ट्रीय सेवा योजना के 7 दिवसीय विशेष शिविर में विविध प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। जिसका लाभ यह होता है की शिविर का प्रत्येक स्वयं सेवक निश्चित ही रूप से किसी न किसी गतिविधि में अपनी विशेष रुचि रखता है। शिविर में स्वयं सेवक को अनिवार्य रूप से ऐसी अनेक गतिविधियों में भाग लेना होता है। और इसका प्रारंभ प्रातः जागरण से हो जाता है। जागरण के नियत समय से

पूर्व प्रभात फेरी का आयोजन होता है। जिसे प्रत्येक दिन समूह के विविध दलों द्वारा निकाला जाता है। जो सभी स्वयं सेवकों को जगाने का काम करती है। जिस दल की यह जिम्मेदारी होती है वह ढोलक, झांझ, मजीरा, वाद्य यंत्र बजाता हुआ जागरण गीत गाते हुये शिविर स्थल के सभी कमरों से स्वयं सेवकों को विभिन्न गीतों एवं नारों के माध्यम से जैसे—“उठ जाग मुशाफिर भोर भई अब रैन कहा जो सोवत है। जो सोवत है सो खोबत है। जो जागत है सो पावत है।” जगाकर अपने साथ लेकर समूह को बड़ा करते हुए आगे सम्पूर्ण कक्षों एवं परिसर में भ्रमण करता है। यह गतिविधि अति उत्साह पूर्ण होती है जिससे स्वयंसेवकों में ऊर्जा का संचार होता है जो उन्हें आनंदित करता है।

जागरण एवं प्रभात फेरी के पश्चात् स्वयंसेवक दैनिक नृत्यकर्म 6:00 से 6.45 बजे सुबह निवृत्त होकर 6:45 पर तैयार होकर प्रार्थना तथा योग/पी.टी./व्याम हेतु शीघ्रता से रोलकाल की विसिल बजाये जाने पर सभी स्वयं सेवक ग्राउण्ड या परिसर में चूने से बनी सामान आकार की 10 पक्तियों में प्रथक-प्रथक छात्र एवं छात्राएँ ऊर्चाई को ध्यान में रखते हुए निश्चित दूरी के अनुसार क्रमबद्ध रूप से स्वयंसेवक पक्तिबद्ध खड़े होते हैं। पंक्ति में सबसे आगे दलनायक खड़ा होता है जो अपने पंक्ति में खड़े दल के सदस्यों की संख्या (गिनती) कुछ इस अंदाज में देता है। जय हिन्द श्रीमान दल क्रमांक गल कुल संख्या 10, उपस्थिति 08, अनुपस्थित 02, अनुपस्थिति का कारण सदस्य का बिमार (या अन्य कारण) होना। इसी प्रकार क्रमशः सभी दल नायक अपनी पंक्ति के सदस्यों की गिनती-कार्यक्रम अधिकारी को देते हैं।

तदपश्चात् पी.टी./व्याम एवं योग से सम्बंधित गतिविधियाँ सम्पन्न कराई जाती हैं। जिसमें सभी स्वयं सेवकों को अभ्यास किसी प्रशिक्षित व्यक्ति एवं कार्यक्रम अधिकारी द्वारा कराया जाता है यह गतिविधि विद्यार्थियों को शान्ति एवं दैर्घ्य प्रदान करने वाली होती है तथा उनकी शरीर लचीला बना रहता है। जो उनके व्यक्तित्व को निखारता है। यही पर दैनिक शिविर समाचार पत्र का वाचन एवं खोया-पाया में प्राप्त वस्तुएँ जो गुम होती हैं दे दी जाती हैं। तथा विशेष दिन आदि की घोषणा की जाती है। 7.15 से 7.45 तक का समय नास्ता का होता है। नास्ता स्वयं सेवकों द्वारा तैयार किया जाता है जिसके निर्देश उन्हें रोलकाल में दे दिये जाते हैं प्रतिदिन नास्ते एवं भोजन की जिम्मेदारी अलग-अलग दल की होती है। चाय नास्ते के पश्चात् 8:00 से 12:00 बजे तक का समय परियोजना कार्य के लिये नियत होता है जिसके विषय में

कार्यक्रम अधिकारी द्वारा पुनः दल के साथ पक्तिबद्ध विद्यार्थियों को विभिन्न तरह के कार्यों जैसे भोजन कौन सा दल बनाएगा परिसर की स्वच्छता कौन सा दल करेगा, बर्तन कौन साफ करेगा, मंच के समीप एवं मंच की साज-सज्जा में कौनसा दल सक्रीय होगा एवं कौन-कौन से दल परियोजना कार्य हेतु शिविर से बाहर जाएंगे। परियोजना कार्य के रूप में विभिन्न कार्यों जैसे-सड़क समतलीकरण, स्वच्छता, तालाब सफाई आदि अनेक तरह के कार्य स्थानीय आव्यकता के आधार पर किये जाते हैं इनमें जागरूकता रैलियाँ एवं ग्रामीण सर्वेक्षण एवं जागरूकता का सन्देश दिये जाने सम्बंधी विभिन्न कार्य सम्मिलित होते हैं।

परियोजना कार्य में विद्यार्थी न केवल उत्साह उमंग के साथ श्रम पूर्ण कार्य करते हैं अपितु वे बहुत सारे कार्यों को करते हैं ग्रामीण लोगों से साक्षात्कार करते हैं उनकी समस्याओं को सुनते हैं एवं स्वच्छता तथा नाली गली की सफाई उनके सहयोग द्वारा करते हैं ताकि उन्हें जागरूक किया जा सके जिसमें ग्रामीण जनो का भी सहयोग प्राप्त होता है। और स्वयं सेवकों को परिस्थितियों का ज्ञान होता है जो उनके व्यक्तित्व विकास में सहायक होती है।

परियोजना कार्य से लौटकर पुनः शिविर स्थल पर पहुंचने के पश्चात् 12:30 से 1:30 बजे दोपहर का समय स्नान एवं भोजन का होता है भोजन हेतु स्वयं सेवक एक कतार से अपने घर से लाई हुई थाली, ग्लास आदि पर ही भोजन लेते हैं और केवल उतना ही भोजन उन्हे लेना होता है जितना की वे खा सके भोजन फेकना मना है। ऐसा करने पर उन्हे दण्डित किया जा सकता है अतः कोई भी स्वयं सेवक भोजन व्यर्थ नहीं करता और इस प्रकार वह भोजन का महत्व समझता है। इसी प्रकार वह स्नान हेतु स्वयं ही पानी को लाता है एवं अपने कपड़े उसे स्वयं ही धाने और सुखाने पड़ते हैं। निरीक्षण दल के सदस्यों एवं कार्यक्रम अधिकारी द्वारा उनके कक्षों का समय-समय पर औचक निरीक्षण किया जाता है। कक्ष में गंदगी न करने के उन्हे निर्देश पूर्व में ही दे दिये जाते हैं। कक्ष में सभी सामानों के व्यवस्थित स्वच्छ एवं सुंदर तरीके से जमें होने पर सर्वश्रेष्ठ कक्ष वाले समूह को सम्मानित भी किया जाता है जिससे विद्यार्थियों को विविध प्रकार की प्रेरणा प्राप्त होती है तथा उन्हे अपने समान को व्यवस्थित करके रखने की आदत का निर्माण होता है।

भोजन पश्चात् 1:30 से 2:30 बजे दोपहर का समय विश्राम एवं स्वाध्याय का होता है विद्यार्थी अपने अपने कक्षों पर जाते

है। वहाँ वे कक्ष को व्यवस्थित करते हैं एवं स्वाध्याय करते हैं। प्रातः सुबह जागरण के पश्चात् विभिन्न गतिविधियों के पश्चात् यह थोड़ा समय विद्यार्थियों को विश्राम हेतु उपलब्ध होता है। जिसका उपयोग प्रायः अधिकांश विद्यार्थी रात्रि में होने वाली सांस्कृतिक गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की रूपरेखा एवं तैयारिया करतें हैं। अतः इस प्रकार विद्यार्थी अल्प से भी अल्प समय का उपयोग अपने व्यक्तित्व विकास करने वाली गतिविधियों हेतु करते हैं।

2:30 से 4:15 बजे दोपहर का समय बौद्धिक कार्यक्रमों का होता है जिसमें विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ व्यक्तियों द्वारा विद्यार्थियों का मार्गदर्शन एवं ज्ञानवर्धन से सम्बंधित व्याख्यान, प्रशिक्षण एवं चर्चा आदि होती है। सातो दिन अलग-अलग क्षेत्रों के विशिष्ट व्यक्तियों जिनमें शिक्षा के क्षेत्र, स्वास्थ्य, बैंकिंग, पुलिस द्वारा आत्म सुरक्षा, साइबर सिक्योरिटी, पर्यावरण, सौलर सेल, जैविक खेती, आपदा प्रबंधन आदि द्वारा विद्यार्थियों को उपयोगी एवं ज्ञानवर्धन जानकारीयें उपलब्ध कराई जाती है। तथा विभिन्न अतिथियों से विद्यार्थियों को वार्तालाप का मौका मिलने से विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

4:15 से 4:30 बजे चाय का समय होता है जिसमें सभी विद्यार्थी एवं अधिकारी, विशिष्ट अतिथियों सहित चाय स्थान पर व्यवस्थित होकर कतारबद्ध रूप से लाईन में लगकर चाय प्राप्त करते हैं। विद्यार्थी शिविर में अपने घर से लाये गये बर्तन का ही स्तेमाल करते हैं तथा उन्हें स्वयं ही धोते हैं। 4:30 से 6:00 बजे शाम का समय-खेलकूद सम्बंधी गतिविधियों का होता है। जिसमें स्वयं सेवक ऐसे देशी साधन रहित खेल खेलते हैं जैसे कितने भाई कितने, जाल-मछली, लीडर पकड, ऐसे कैसे, रूमाल झपट्टा, राम रावण युद्ध आदि इन खेलों में स्थानीय ग्रामीण युवाओं के साथ भी यही खेल खेले जाते हैं। जिनसे युवाओं में उत्साह एवं आनंद आता है। प्रतियोगिता उनमें टीम भावना, अनुशासन, आदि गुणों का विकास करती है। 6:00 से 7:00 बजे तक भाम का समय ग्राम सम्पर्क का होता है जिसमें स्थानीय क्षेत्र के अनुसार सम्पर्क किया जाता है और नहीं भी यह क्षेत्र की परिस्थितियों पर निर्भर करता है। जिनमें कार्यक्रम अधिकारियों के साथ शिविर के कुछ विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं।

7:00 से 7:30 बजे तक का समय शिविर की विभिन्न समितियों की बैठक एवं कार्यों का मूल्यांकन/ संकलन आदि किया जाता है जिसमें विशेषकर कार्यक्रम अधिकारी उपस्थित होते हैं अन्य अधिकारी तथा कुछ स्वयं सेवक जिन्हें किसी

समिति का सदस्य बनाया जाता है उनके बीच मंत्रणा होती है। भोश विद्यार्थी सांस्कृतिक कार्यक्रम की तैयार अति अल्प समय में सम्पूर्ण टीम के समन्वय बनाकार तैयार करते हैं एवं उसकी प्रेक्टिस भी करते हैं ऐसा वे प्रायः प्रतिदिन किया करते हैं।

7:30 से 8:00 बजे रात्रि का समय भोजन का होता है। भोजन बनाने की प्रतिदिन ड्यूटी या जिम्मेदारी बारी-बारी से प्रत्येक दल के कुछ लोगों की होती है स्वयं सेवक भोजन की कतार में क्रमबद्ध होकर खड़े रहते हैं। स्वयं सेवक शिविर में प्लास्टिक एवं डिस्पोजल प्रतिबंधित होता है। वहाँ खाना स्वच्छ साफ एवं शुद्ध शाकाहारी होता है। भोजन में मांस मछली एवं अण्डा का प्रयोग शिविर में वर्जित होता है। स्वयं सेवक अपनी थाली में केवल उतना ही खाना लेते हैं। जितना की वे खा सके। खाना थाली में बचाना प्रतिबंधित या अनुचित माना जाता है। स्वयं सेवक को भोजन के समय स्वयं की जिम्मेदारी के साथ निश्चित समय पर पहुंचना होता है। विलम्ब से आने वालों के लिए भोजन बचाकर नहीं रखा जाता केवल जो पूर्व में सूचित करके जाता है। किन्ही कारणों से वह उपस्थित नहीं होगा तभी उसका खाना रखा जाता है।

शिविर की इस समस्त क्रियाओं से विद्यार्थियों में अनुशासन, समय प्रबंधन, सहयोग एवं सामूहिकता की प्रवृत्तियों के साथ अपना काम स्वयं करने की आदतों का निर्माण होता है। जो उनके व्यक्तित्व को निखारता हैं। भोजन के पश्चात् सभी स्वयं सेवक 8:00 से 10:00 बजे रात्रि पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि में व्यस्त रहते हैं। परिस्थितियों के अनुरूप कार्यक्रम के समय को बढ़ाया एवं घटाया जाता है।

प्रातः जागरण से लेकर भाम तक स्वयं सेवक शिविर में होने वाली गतिविधियों में अत्यंत थक जाने के बावजूद भी उत्साह एवं उमंग के साथ सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेता है। उसकी दिनभर की समस्त भाग दौड़, कठोर श्रम के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम उन्हें विशेष आनंद तो देते हैं साथ ही साथ उनकी प्रतिभाओं एवं रचनात्मक क्षमताओं के बढ़ाने का भी कार्य करता है। एकल एवं सामूहिक नृत्य, गीत नाटक, मिमिकरी, भाषण, विशेष एक्ट आदि विविध तरह की गतिविधियों में समस्त स्वयं सेवकों की सहभागिता का ध्यान रखा जाता है।

मंच के संचालन से लेकर सांस्कृतिक कार्यक्रम की समस्त गतिविधियों का भार स्वयं सेवकों पर होता है। अतः प्रत्येक विद्यार्थी किसी न किसी गतिविधि में अनिवर्य रूप से

सम्मिलित होने से उसमें आत्मविश्वास बड़ता है। समूह के साथ मिलकर काम करने की प्रेरणा मिलती है तथा वह अपने व्यक्तित्व का विकास विभिन्न कार्यक्रमों में सहभागिता के माध्यम से स्वतः की करता चला जाता है। तथा रात्रि 10:00 सांस्कृतिक गतिविधियों के समापन के पश्चात् सभी स्वयं

सेवक अपने अपने कक्षों में विश्राम हेतु चले जाते हैं। शिविर में छात्र एवं छात्राओं दोनों के लिए अलग-अलग विश्राम स्थल होते हैं। जिनके देख रेख हेतु छात्रों के लिए पुरुष कार्यक्रम अधिकारी एवं छात्राओं के लिए महिला कार्यक्रम अधिकारी की देख रेख में विद्यार्थियों को रखा जाता है।

सारणी क्रमांक-01

सात दिन के शिविर में स्वयं सेवको ने अनुभव किया

क्र.	स्वयं सेवको द्वारा शिविर में अनुभव प्राप्त किया गया	संख्या	प्रतिशत
1	शिविर का अनुभव बहुत ही उपयोगी एवं अच्छा रहा	100	100.00
2	शिविर की गतिविधियाँ जीवन में बदलाव लाने के लिए उपयोगी रही	88	88.00
3	जीवन में अनुशासन के महत्व को समझा गया	79	79.00
4	जीवन में समय के महत्व को समझा गया	83	83.00
5	शिविर में श्रम के महत्व को समझा गया	82	82.00
6	जल्दी उठने की आदत का निर्माण हुआ	78	78.00
7	प्रातः पी.टी., व्याम योग आदि से शरीर में ताजगी का अनुभव किया	79	79.00
8	भोजन व्यर्थ न फेकने की अच्छी आदत बनी	80	80.00
9	समय के अनुसार संतुलित भोजन करने की आदत सीखी	79	79.00
10	परियोजना कार्य में श्रम करके, मजदूरों के श्रम के महत्व को समझा	73	73.00
11	परियोजना कार्य में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के महत्व को समझा	68	68.00
12	शिविर में मिल जुलकर कार्य करना सीखा	65	65.00
13	एक-दूसरे के सहयोग के महत्व को समझा गया	88	88.00
14	शिविर में भोजन पकाने का अनुभव ग्रहण किया गया	91	91.00
15	शिविर में अपने कपडे स्वयं धोने एवं नहाने के लिए पानी लाना सीखे	90	90.00
16	शिविर में अपने कमरे को व्यवस्थित एवं साफ करना सीखा गया	63	63.00
17	शिविर में जूते एवं चप्पलों को व्यवस्थित जमाकर रखना सीखा गया	69	69.00
18	शिविर में हर कार्य लाईन में लगकर क्रमबद्ध करना सीखा	92	92.00
19	हर कार्य लाइन में लगने के कारण किसी कार्य में धैर्य करना सीखा	79	79.00
20	शिविर में समूह के साथ मिल बांटकर खाने की आदत सीखी	90	90.00
21	ग्रामीण लोगों की समस्याओं पर साक्षात्कार अनुसूची भरने का अनुभव हुआ	98	98.00
22	बिना साधनों के खेल-खेलने का अनुभव प्राप्त किया गया	98	78.00
23	रैलियों में नारे लगाने का अनुभव प्राप्त किया गया	65	65.00
24	चित्रकला, भाषण, पेन्टिंग रंगोली आदि प्रतियोगिता से उत्साह मिला	77	77.00
25	बौद्धिक सत्र में विद्वानों द्वारा विभिन्न ज्ञानवर्धक बातें अच्छी लगी	81	81.00
26	विभिन्न अधिकारियों से बात चीत करने पर आत्मविश्वास बड़ा	76	76.00
27	मंच संचालन एवं मंच पर जाने का डर समाप्त हुआ	73	73.00
28	विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने पर झिझक समाप्त हुई	84	84.00
29	पर्यावरण संरक्षण एवं वृक्षारोपण की प्रेरणा प्राप्त हुई	62	62.00
30	ग्रामवासियों को जागरूकता का संदेश देने में आत्मविश्वास बड़ा	75	75.00

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 में शिविर की 7 दिनों की गतिविधियों में स्वयं सेवकों ने अनुभव किया से सम्बंधित विभिन्न प्रश्नों के उत्तरों को प्रदर्शित किया गया है। जिसमें सत् प्रतिशत स्वयं सेवकों ने शिविर को बहुत ही उपयोगी एवं अच्छा अनुभव किया इसी प्रकार 88.00 प्रतिशत ने शिविर की गतिविधियों को जीवन में बदलाव लाने के लिए उपयोगी बताया। 79.00 प्रतिशत ने अनुशासन के महत्व को समझा, 83.00 प्रतिशत ने समय के महत्व को समझा, 82.00 प्रतिशत ने शिविर में श्रम करने के महत्व को समझा, 78.00 प्रतिशत ने जल्दी उठने की आदत के निर्माण को महत्वपूर्ण माना, 79.00 प्रतिशत ने सुबह पी.टी. योग, व्याम करने से शरीर में ताजगी का अनुभव किया, 80.00 प्रतिशत ने भोजन व्यर्थ न फेकने की अच्छी आदत के निर्माण को महत्व दिया, 79.00 प्रतिशत ने समय के अनुसार संतुलित भोजन करने की आदत सीखी, 73.00 प्रतिशत ने परियोजना कार्य में श्रम करके मजदूरों के श्रम के महत्व को समझा, 68.00 प्रतिशत ने प्राकृतिक संसाधनों के महत्व को समझा, 65.00 प्रतिशत ने शिविर में मिलजुलकर काम करने के महत्व को समझा, 88.00 प्रतिशत ने एक दूसरे के सहयोग के महत्व को समझा, 91.00 प्रतिशत ने शिविर में भोजन बनाने के अनुभव को ग्रहण किया, 90.00 प्रतिशत ने अपने कपड़े धोना एवं नहाने हेतु पानी लाना सीखा, 63.00 प्रतिशत ने अपने कमरे को साफ स्वच्छ एवं व्यवस्थित करना सीखा वहीं 69.00 प्रतिशत ने जूते-चप्पलों आदि को व्यवस्थित क्रम में रखना सीखा, 92.00 प्रतिशत ने शिविर में हर काम लाईन लगाकर क्रमबद्ध करना सीखा, 79.00 प्रतिशत ने लाईन में लगने से अपने आप में धैर्य के गुण का सीखा, 90.00 प्रतिशत ने शिविर में समूह के साथ मिलकर भोजन खाने के व्यवहार से प्रभावित हुये, 98.00 प्रतिशत ने ग्रामीणों की समस्याओं को सुनकर उन्हें साक्षात्कार अनुसूचि भरने का अनुभव प्राप्त हुआ, 78.00 प्रतिशत को बिना

साधनों के खेल सीखने का मौका मिला, 65.00 प्रतिशत को रैलियों में जाने एवं नारे लगाने का अनुभव प्राप्त हुआ, 77.00 प्रतिशत को विविध प्रतियोगिताओं भाषण, चित्रकला, पोस्टर कोलाज, वाद-विवाद, रंगोली आदि प्रतियोगिताओं में उत्साह मिला, 81.00 प्रतिशत को बौद्धिक सत्र में विभिन्न विद्वानों की बातें अच्छी लगी, 76.00 प्रतिशत ने विभिन्न विद्वानों से बात चीत कर अपने आत्मविश्वास के बड़ने की बात स्वीकारी, 73.00 प्रतिशत ने मंच संचालन एवं मंच पर जाने के डर समाप्त होने की बात स्वीकारी, 84.00 प्रतिशत ने विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेकर अपनी झिझक को खत्म किया, 62.00 प्रतिशत ने पर्यावरण संरक्षण एवं वृक्षारोपण से प्रेरणा प्राप्त की, तथा 75.00 प्रतिशत ने ग्रामवासियों को जागरूकता का

संदेश देने में आत्मविश्वास में वृद्धि होने की स्थिति को स्पष्ट किया।

अतः शिविर के सात दिनों की विविध गतिविधियों से विद्यार्थियों ने बहुत कुछ सीखा एवं अनुभव किया जो उनके आत्मविश्वास को बड़ाने एवं व्यक्तित्व निर्माण में बहुत की महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में उपयोगी सिद्ध हो रही है।

तथ्यों का विश्लेषण:-

प्रस्तुत शोध आलेख में राष्ट्रीय सेवा योजना के 7 दिवसीय शिविर में विद्यार्थियों द्वारा की गई विभिन्न तहर की गतिविधियों जिन की सारणी क्रमांक एक में प्रश्नों के उत्तर के रूप में परिणाम प्राप्त हुये है यह प्रदर्शित करते है की व्यक्तित्व निर्माण में विभिन्न गतिविधियों को करने में हुये सामाजीकरण का प्रभाव युवाओं पर होने से उनके दैनिक जीवन में उनकी अनावश्यक बुरी आदतों में परिवर्तन प्रदर्शित होता है। अतः शिविर की गतिविधियां विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का निर्माण, शिक्षण या सामाजीकरण द्वारा करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है।

उपकल्पनाओं का सत्यापन:-

शोध आलेख हेतु एक उपकल्पना विकसित की गई थी- कि सामान्य विद्यार्थी की तुलना में राष्ट्रीय सेवा योजना का विद्यार्थी अधिक सक्रीय एवं रचनात्मक होता है। सारणी क्रमांक एक से प्राप्त विभिन्न प्रश्नों के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष यह प्रमाणित करते है की राष्ट्रीय सेवा योजना का विद्यार्थी विभिन्न गतिविधियों में संलग्नता के कारण सामान्य विद्यार्थी की तुलना में अधिक सक्रीय एवं रचनात्मक होता है जो उपकल्पना की प्रमाणिकता को सिद्ध करती है।

निष्कर्ष:-

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है। कि किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करने में शिक्षण/सामाजीकरण एवं गतिविधियां बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती हैं। सात दिन के शिविर में विद्यार्थी न केवल गतिविधियों को देखता है अपितु उनमें स्वयं ही सम्मिलित होकर सात दिनों तक उसका अभ्यास भी करता है। यह व्यवहार सामान्य जीवन या परिवार में प्रायः व्यवस्थित न होने के कारण उन्हें नया आकर्षक एवं प्रभावी लगता है जो उसे अन्य लोगों से विशिष्ट एवं भिन्न व्यक्तित्व प्रदान करता है जिसका प्रदर्शन वह मान्य व्यक्तियों एवं विद्यार्थियों के मध्य करके अपने स्टेटस को बड़ा हुआ पाता है। आत्मसम्मान से

उत्साहित होता है, उसका मनोबल बड़ जाता है जो उसके व्यक्तित्व को प्रभावी बनाता है।

सुझाव:-

राष्ट्रीय सेवा योजना व्यक्तित्व विकास की प्रेरणा के साथ ही प्रारंभ किया गया था जो अपनी गतिविधियों के माध्यम से व्यक्तित्व का विकास करने में सक्षम है इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी को अपने शिक्षाकाल में राष्ट्रीय सेवा योजना का सदस्य बनकर अपने व्यक्तित्व एवं चरित्र का निर्माण करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. राष्ट्रीय सेवा योजना, मार्गदर्शिका, संकलन सूच्यांकित प्रशिक्षण संस्थान, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय रसेयो, भोपाल पृ. स. 12
2. विद्याविभूषण एवं डी. आर. सचदेव(1997), समाजशास्त्र के सिद्धांत, किताब महल पब्लिकेशन्स इलाहाबाद, पृ.स. 760, 761
3. रावत हरिकृष्ण, (2008) उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोष, रावत पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, पृ. स. 462
4. राष्ट्रीय सेवा योजना, मार्गदर्शिका, संकलन सूच्यांकित प्रशिक्षण संस्थान, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय रसेयो, भोपाल पृ. स. 27